हक हादी रूहें सुख अर्स चांदनी, अर्स अंबर जोत होवत।
सो क्यों रहें हक कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।। १६ ।।

रंग महल की चांदनी के ऊपर श्री राजश्यामाजी, रूहें बैठती हैं, जिनका तेज आकाश में फैलता है। अब वह रूहें श्री राजजी के चरणों बिना कैसे रहें जो श्री राजजी की अंगना हैं।

सकल भोम सुख लेवहीं, रूहें हक कदम पकरत।
सो क्यों रहें इन कदम बिना, जाकी असल हक निसबत।। १७ ।।

रूहें श्री राजजी महाराज के चरण पकड़कर दसों भोम के सुख लेती हैं। संसार में श्री राजजी के चरण बिना कैसे रहें जो श्री राजजी की अंगना हैं।

आई नजीक जागनी, पीछे तो उठ बैठत।
हांसी होसी भूली पर, जाकी असल हक निसबत।। १८ ।।

अब जागनी का समय नजदीक आ गया है। पीछे तो सभी उठ बैठेंगे। जो भूलेगी उस पर हंसी होगी, क्योंकि श्री राजजी की अंगना हैं।

रूहें हुकम ले दौड़ियो, मूल तन अर्समें उठत।
हक हंससी तुम ऊपर, रूहें क्यों भूली ए निसबत।। १९ ।।

हे रूहो! अब श्री राजजी महाराज के हुकम से जागृत होकर दौड़ो, जिससे तुम्हारी परआतम परमधाम में जागृत हो जाए। ऐसी निसबत को भूलने से श्री राजजी महाराज तुम्हारे पर हंसेंगे, क्योंकि तुम उनकी अंगना हो।

आया नजीक बखत मोमिनों, क्यों भूलिए हादी नसीहत।
जो सुपने कदम न भूलिए, हंसिए हकसों ले निसबत।। २० ।।

हे मोमिनो! जागने का समय नजदीक आ गया है, इसलिए श्री राजजी की नसीहत को क्यों भूलें? सपने में भी श्री राजजी के चरणों को न भूलें, तब हम श्री राजजी की अंगना हैं। खेल समाप्ति पर श्री राजजी के साथ मिलकर हम हंसेंगे।

लाहा लीजे दोनों ठौरका, सुनो मोमिनों कहे महामत।
क्यों सुपने ए चरन छोड़िए, अपनी असल निसबत।। २१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! सुनो, अगर हमने अपनी निसबत पहचान कर सपने में श्री राजजी के चरण न छोड़े तो खेल में और परमधाम में दोनों ठिकानों का सुख मिलेगा।

।। प्रकरण ।। ९ ।। चौपाई ।। ५४८ ।।

श्री राजजी की इजार

असल इजार एक पाचकी, एकै रस सब ए।
कई बेल पात फूल बूटियां, रंग केते कहूं इनके।। १ ।।

श्री राजजी की इजार हरे रंग की है। पूरी इजार में एक ही शोभा है। जिसमें बेल, पत्ते, फूल, बूटियां कई रंग की बनी हैं।

Nijanand App

बेल मोहोरी इजार की, जानों एही भूखन सुन्दर।
अतंत सोभा सबसे, एही है खूबतर।। २ ।।

इजार की मोहरी पर बेल बनी हैं जैसे सुन्दर आभूषण पहने हैं। यह शोभा सबसे अधिक लगती है।

इजार बंध नंग कई रंग, कई बूटी कई नकस।
निरमान न होए इन जुबां, ए वस्तर अजीम अर्स।। ३ ।।

इजारबंध में कई रंगों के नग हैं और कई बूटियां और कई नक्शकारी हैं। यह बनाए नहीं जाते। यह अखण्ड परमधाम के वस्त्र हैं। इनका यहां की जबान से कैसे वर्णन हो?

अति सोभा अति नरमाई, नंग सोभित नरम पसम।
अर्स चीज न आवे सब्दमें, ए नेक केहेत हुकम।। ४ ।।

परमधाम के नगों में अत्यन्त शोभा है तथा पश्म के समान नरमाई है, इसलिए परमधाम की चीजें शब्दातीत हैं। यह थोड़ा सा वर्णन मैंने श्री राजजी के हुकम से किया है।

बेल पात फूल कई विधके, कई विध कांगरी इत।
जोत न नरमाई सुमार, जुबां क्या कहे सिफत।। ५ ।।

बेल, पात, फूल, कई तरह की कांगरी की ज्योति तथा कोमलता बेशुमार हैं। यहां की जबान से कैसे वर्णन करें?

नेफा रंग कसूंबका, अति खूबी अतलस।
बेल भरी मोती कांगरी, जानों ए भूखन से सरस।। ६ ।।

नेफे का रंग लाल है जो अतलस (सनील) की बनी है। जिसमें बेलें बनी हैं और मोतियों के कंगूरे हैं। लगता है यह आभूषणों से अच्छे हैं।

ताना बाना रंग रेसम, जवेर का सब सोए।
बेल फूल बूटी तो कहूं, जो मिलाए समारे होए।। ७ ।।

ताना, बाना तथा रंग सब रेशमी हैं और जवेरों के हैं। जिनमें बनी बेल, फूल, बूटियों का वर्णन तब करें यदि किसी ने बनाए और संवारे हों।

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। ५५५ ।।

खुले अंग सिनगार छबि छाती

रूह मेरी क्यों न आवे तोहे लज्जत, तोको हकें कही अर्स की।
अर्स किया तेरे दिलको, तोहे ऐसी बड़ाई हकें दई।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरी रूह! तुझे श्री राजजी महाराज ने परमधाम की कहा है, इसलिए तेरे दिल को अर्श बनाया है। श्री राजजी महाराज ने तुझे बड़ाई दी है, तो तुझे इस सुख की लज्जत क्यों नहीं आती?

जो कदी तैं आई नहीं, तोमें हक का है हुकम।
हुज्जत दई तोको अर्सकी, दिया बेसक अपना इलम।। २ ।।

यदि मानो तू परमधाम से खेल में नहीं आई है, फिर भी तेरे अन्दर श्री राजजी का हुकम है और परमधाम के होने की शोभा दी है। अपनी जागृत बुद्धि की अखण्ड वाणी दी है।

Nijanand App